vinetur

गर्मी और सूखे से टस्कनी में 2026 की अंगूर फसल घटी

फ्लोरेंस के कृषि-विज्ञानियों के मुताबिक, गर्मी से अंगूर के गुच्छे छोटे हुए और Sangiovese जल्दी पकी ; फसल कम रही, लेकिन गुणवत्ता अच्छी रही

बुधवार, 18 नवंबर 2026



फ्लोरेंस के कृषि-विज्ञानियों के संघ के प्रमुख के अनुसार, लंबे समय तक गर्मी और सूखे के कारण बेलों—खासकर Sangiovese—को असामान्य रूप से कठिन बढ़वार के मौसम से गुजरना पड़ा। इसके बाद टस्कनी की 2026 की अंगूर फसल की गुणवत्ता तो अच्छी रही, लेकिन उसकी मात्रा घट गई।

मंगलवार, 17 नवंबर को प्रकाशित टिप्पणियों में फ्लोरेंस के कृषि-विज्ञानियों के संघ के अध्यक्ष Michele Pelagatti ने कहा कि पूरे क्षेत्र के उत्पादकों को कम फसल मिली और कटाई का ऐसा कार्यक्रम अपनाना पड़ा जिसने टस्कनी की सबसे अहम किस्मों की कड़ी परीक्षा ली। उन्होंने कहा कि बार-बार चलने वाली गर्म हवाएं पहले शुरू हुईं और पहले की तुलना में अधिक समय तक बनी रहीं, जिसके चलते क्षेत्र की प्रमुख अंगूर किस्म Sangiovese का वानस्पतिक चक्र हाल के वर्षों के मुकाबले काफी पहले पूरा हो गया।

Pelagatti ने कहा कि टस्कनी का वाइन क्षेत्र उत्पादन के एक जटिल दौर से गुजर रहा है। उनके मुताबिक, अंगूर की खेती के लिए क्षेत्र की लंबे समय से स्थापित अनुकूलता को तापमान में तेज बढ़ोतरी चुनौती दे रही है, जो कई वर्षों से गर्मियों की पहचान बनी हुई है। उन्होंने कहा कि पहले बेलों पर गर्मी का दबाव मुख्यत: जुलाई और अगस्त के कुछ हफ्तों तक सीमित रहता था। हाल के समय में यह दबाव जून में ही शुरू होने लगा था, जबकि 2026 में अत्यधिक तापमान लगभग लगातार एक के बाद एक दर्ज हुआ।

उन्होंने कहा कि उमस भरी रातों ने भी गर्मी का असर बढ़ाया, क्योंकि बेलों को ठीक से उबरने का मौका नहीं मिला। सितंबर की शुरुआत तक बारिश न होने के साथ इस स्थिति ने अंगूर के गुच्छों का औसत वजन काफी घटा दिया। उनके अनुसार, गुच्छों का वजन कम होने से उत्पादन घटा, हालांकि इससे फल की सेहत बनाए रखने में मदद मिली।

Pelagatti ने कहा कि 2026 को हाल के वर्षों की सबसे खराब फसल नहीं माना जाना चाहिए, लेकिन यह उन सबसे स्पष्ट उदाहरणों में से एक है जो दिखाते हैं कि सुगंध और फेनोलिक परिपक्वता के नाजुक चरणों में बेलों पर कितना दबाव पड़ा। उन्होंने कहा कि वाइनरी को वाइन बनाने के दौरान बहुत बारीकी से ध्यान देना पड़ा, क्योंकि फल के तकनीकी मानकों को सावधानी से संभालना जरूरी था।

मौसम हर लिहाज से प्रतिकूल नहीं था। Pelagatti ने कहा कि ऊंचे तापमान के कारण हाल के वाइन उत्पादन सत्रों में असर डालने वाले कई कीटों को नियंत्रित करना आसान हुआ और पादप-स्वास्थ्य के लिहाज से 2026 सबसे स्वस्थ वर्षों में से एक रहा। उन्होंने यह भी कहा कि बारिश के स्वरूप के चलते अंगूर के बागों का सटीक प्रबंधन जरूरी था। अप्रैल में वसंत की शुरुआत बारिश के साथ हुई, लेकिन अगले महीनों में बारिश कम बार हुई और जब हुई तो भारी हुई। फिर भी, पहले से सोच-समझकर प्रबंधन किए गए बागों में इन तेज बारिशों के बाद समय रहते कदम उठाए जा सके, जिससे मिट्टी का कटाव और दबना सीमित रखने में मदद मिली।

उन्होंने कहा कि मुश्किल हालात का असर शुरुआती कटाई में खास तौर पर दिखा। इसके बाद सितंबर के मध्य में हुई बारिश से अप्रत्याशित राहत मिली और बेलों पर लगे अंगूरों को बेहतर संतुलन हासिल करने तथा स्पष्ट रूप से सुधरने का मौका मिला। Pelagatti ने कहा कि यह स्थिति केवल Sangiovese और क्षेत्र के ऐतिहासिक अपीलेशनों तक सीमित नहीं थी। टस्कनी की अन्य लाल किस्मों और सफेद अंगूरों पर भी जलवायु बदलावों का असर पड़ा, हालांकि हर किस्म ने अपनी शारीरिक विशेषताओं और वाइन बनाने के उद्देश्यों के अनुसार अलग प्रतिक्रिया दी।

उन्होंने कहा कि डिजिटल उपकरण उत्पादकों को अनुकूलन में पहले से मदद कर रहे हैं। रोग के दबाव पर नजर रखने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली निर्णय-सहायता प्रणालियों ने पौध-संरक्षण को अधिक लक्षित बनाने में मदद की है और उत्पादकों की लागत भी घटाई है।

Pelagatti ने एक और जलवायु की दृष्टि से कठिन साल का प्रबंधन करने के लिए टस्कनी के अंगूर उत्पादकों और उनके परामर्शदाता कृषि-विज्ञानियों की सराहना की। उन्होंने कहा कि कम फसल के बावजूद 2026 की टस्कन वाइनों की गुणवत्ता की संभावनाएं बहुत अच्छी हैं।

पेय उद्योग के लिए यह फसल एक ऐसे व्यापक मुद्दे की ओर संकेत करती है जिसका असर एक मौसम से आगे तक जा सकता है। किसी प्रमुख वाइन क्षेत्र में पैदावार घटना और अंगूरों का जल्दी पकना उत्पादकों को बागों की देखभाल, कटाई के समय और आपूर्ति की योजना में बदलाव करने के लिए मजबूर कर सकता है—खासकर Sangiovese-आधारित वाइनों के मामले में—यदि गर्मी और सूखे का यह रुझान जारी रहता है। Pelagatti ने यह भी कहा कि अब वाइन बाजार को फिर से संतुलन हासिल करने की जरूरत है, ताकि ऐसी परिस्थितियों से निपटने में लगने वाली मेहनत के लिए उत्पादकों को उचित भुगतान मिले।